CMYK

www.maharashtracrimes.in www.maharashtracrimes.blogspot.in
Email : editor@maharashtracrimes.in maharashtracrimes@gmail.com

RNI NO. : MAHHIN/1998/02261

महाराष्ट्र क्राईम्स

वर्ष 21 | अंक 03 | मुंबई, 05 जनवरी 2022 | पृष्ठ : 8 | कीमत : 5 रुपये | प्रधान संपादक : सिराज चौधरी

विवाहिता के साथ पुलिसवाला 6 सालों से कर रहा था बलात्कार

पति और बेटे को मारने की देता था धमकी

महाराष्ट्र : महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के पेण में एक विवाहित महिला के साथ बलात्कार का मामला सामने आया है. विवाहिता के साथ पुलिसवाले ने ही बलात्कार किया है. खाकी वर्दी का फायदा उठाते हुए पति और बेटे को जान से मारने की धमकी देकर आरोपी ने पीड़िता के साथ सहमति के बिना 6 सालों तक शारीरिक संबंध बनाए.

जब रोज-रोज की शारीरिक सुख की मांग असहनीय हो गई तो हार कर पीड़िता ने शुक्रवार की रात संबंधित पुलिस कांस्टेबल के खिलाफ शिकायत दर्ज करवा दी. इसके बाद पेण सिटी पुलिस थाने में आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया गया. पुलिस ने आरोपी को अरेस्ट कर लिया है. आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया. कोर्ट ने आरोपी को पुलिस कस्टडी में भेज दिया है. आरोपी पुलिस कांस्टेबल अलिबाग के मुख्यालय में कार्यरत है. वह पेण के रामवाडी के पास शिवाजी नगर का रहने वाला है.

अपनी वर्दी का फायदा उठाते हुए उसने पेण शहर में रहने वाली एक विवाहित महिला का यौन शोषण किया. वर्दी का डर दिखाते हुए वह विवाहिता के पति और बच्चे को जान से मारने की धमकी दिया करता था. 2015 से वह संबंधित विवाहिता से जबर्दस्ती शारीरिक संबंध बना रहा था. यह जानकारी पीड़िता ने शुक्रवार की रात पेण पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करवाते हुए बताई. शिकायतकर्ता महिला की शिकायत के आधार पर पेण पुलिस ने संबंधित पुलिस कांस्टेबल के खिलाफ केस दर्ज किया. इसके बाद आरोपी को पेण पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया. जिस वक्त पीड़िता पेण पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज करवा रही थी, आरोपी थाने पहुंच गया और हंगामा करने लगा. थाने में तैनात महिला पुलिसकर्मियों से भी बदतमीजी करने लगा.

उन्हें गालियां भी दी. समझाए जाने पर वह और भी ज्यादा गाली-गलौज पर उतारू हो गया और उन पर लात-घूंसे से वार करने लगा. उसे मेडिकल जांच के लिए उप जिला अस्पताल में ले जाने वाले पुलिसकर्मी को भी उसने भद्दी-भद्दी गालियां दी. आखिर में पेण पुलिस ने आरोपी पर सरकारी कामों में अड़चनें पैदा करने का केस भी दर्ज कर लिया. पेण पुलिस द्वारा आगे की जांच और कार्रवाई शुरू है.

महाराष्ट्र के मंत्री का केंद्र से सवाल

'सुल्ली डील्स' पर अब तक क्यों नहीं लिया ऐक्शन...!

महाराष्ट्र : मुस्लिम महिलाओं को निशाना बनाने वाली 'बुल्ली बाई' ऐप को बनाने वालों के खिलाफ पुलिस को कार्रवाई का निर्देश देते हुए महाराष्ट्र सरकार के मंत्री सतेज (बंटी) पाटिल ने केंद्र सरकार से सवाल किया कि अभी तक 'सुल्ली डील्स' ऐप पर कोई ऐक्शन क्यों नहीं लिया गया है। इस ऐप पर भी मुस्लिम महिलाओं की ठीक वैसे ही नीलामी की जा रही थी जैसे बुल्ली बाई ऐप पर। महाराष्ट्र पुलिस ने बुल्लीबाई ऐप बनाने वालों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। पाटिल ने केंद्रीय सूचना एवं तकनीकी मंत्री अश्विनी वैष्णव से सवाल किया कि जून 2021 में सामने आए सुल्ली डील्स मामले को लेकर अभी तक कोई ऐक्शन क्यों नहीं लिया गया है।

इतना ही नहीं महाराष्ट्र के मंत्री ने केंद्र पर निशाना साधते हुए कहा, 'क्या इस मामले में शामिल प्लेटफॉर्मों को केंद्र सरकार द्वारा सूचित किया गया था? इन सभी प्लेटफॉर्मों के मुख्यालय भारत से बाहर हैं। ऐसे में डेटा ट्रांसफर के लिए हमारे पास क्या प्रावधान है?' पाटिल ने कहा कि बीते साल केंद्र सरकार डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्मों के नियमन के लिए विवादित कानून लाई थी, लेकिन महिलाओं और बच्चों के खिलाफ इस तरह के मामलों में उस कानून का इस्तेमाल न किया जाए, तो ये कानून किस काम का है?

बता दें कि बुल्लीबाई एप पर बिना अनुमति के मुस्लिम महिलाओं की फोटो अपलोड की गई हैं। साथ ही उनकी फोटो के साथ प्राइस टैग लगाकर डील ऑफ द डे लिखा गया है। इससे पहले पिछले साल इससे मिलते-जुलते नाम वाला 'सुल्ली डील्स'नाम का ऐप भी विवादों में घिर गया था। इसे भी गिटहब पर ही बनाया गया था। इस ऐप पर भी मुस्लिम महिलाओं की फोटो उनके सोशल मीडिया अकाउंट से उठाकर अपलोड कर दी गई थीं। बाद में विवाद के बाद इस ऐप को हटा दिया गया था। बुल्ली बाई ऐप भी काफी हद तक सुल्ली बाई ऐप की तरह ही है। यहां पर भी मुस्लिम महिलाओं की फोटो लगाई गई है। महिलाओं की फोटो के साथ प्राइस टैग भी लिखा हुआ है।

नौगढ़ की गलियों से तय किया एशिया कप तक का सफर

सिद्धार्थनगर : पुरानी नौगढ़ की गलियों में चौके-छक्के लगाने वाले किशोर ने अंडर-19 एशिया कप तक का सफर तय कर लिया है। बशीर अहमद ने दुबई में हुए अंडर-19 एशिया कप में नेपाल की टीम में हरफनमौला खिलाड़ी की भूमिका को निभाया। अब नेपाल की राष्ट्रीय टीम के लिए दावेदारी की है। बांग्लादेश के आलराउंडर शाकीबुल हसन को अपना आदर्श मानने वाले बशीर उन्हीं की तरह बाएं हाथ से बल्लेबाजी व स्पिन गेंदबाजी करते हैं। क्षेत्ररक्षण में चीते के समान फुर्तीले हैं। एशिया कप के तीन मैच में एक अर्धशतक लगाया। कुल 107 रन बनाने के साथ दो विकेट चटकाए।

नेपाल के कपिलवस्तु जिला के वार्ड नंबर चार के मूल निवासी व 18 वर्ष 30 दिवस आयु के बशीर अहमद ने क्रिकेट का ककरहरा यहां के स्टेडियम में सीखा। वह यहां पर पुरानी नौगढ़ कस्बा स्थित डाकखाना मोहल्ला में किराए के कमरा में रहकर पहली बार बैट पकड़ा। इसके बाद क्रिकेट का ऐसा जुनून चढ़ा कि सीधे स्टेडियम का रूख कर दिया। यहां संचालित गौतम बुद्ध क्रिकेट एकेडमी के कोच विवेक मणि व विपिन मणि ने प्रतिभा को पहचाना। नेपाल में होने वाले प्रधानमंत्री कप (समकक्ष रणजी ट्राफी) के

लिए पहले लुंबिनी प्रदेश की टीम में जगह बनाई। अंडर-19 एशिया कप के लिए बाएं हाथ के बल्लेबाज व आथोर्डाक्स स्पिनर के रूप में चयनित हुए।

इस खिलाड़ी के कोच कहते हैं कि बशीर अहमद में प्रतिभा की कमी नहीं है। जैसे-जैसे और ऊपर जाएगा, प्रदर्शन में निखार आता जाएगा। बशीर अहमद ने कहा कि फरवरी में नेपाल में प्रधानमंत्री कप आयोजित होगा। लुंबिनी टीम में चयन हुआ है। इस प्रतियोगिता में सात प्रदेश व तीन सरकारी संस्थाओं समेत कुल दस टीम प्रतिभाग करेंगी। राष्ट्रीय टीम में स्थान बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू कर दी है। रोजाना सिद्धार्थनगर के स्टेडियम में सात से आठ घंटे प्रैक्टिस चल रहा है।

दुबई में हुए अंडर-19 एशिया कप के नाकआउट में नेपाल की टीम स्थान बनाने में असफल रही, लेकिन बशीर अहमद ने अपने प्रदर्शन से सबका ध्यान आकृष्ट किया। पहला मैच बांग्लादेश के खिलाफ खेला। पहली बार बड़ा मैच खेलने की हड़बड़ाहट दिखी। इस मैच में मात्र आठ रन बनाए। दूसरे मैच में श्रीलंका के विरुद्ध 43 रन की तेज तर्रार पारी खेली। आखिरी लीग मैच में कुवैत के खिलाफ 56 रन बनाए।

महाराष्ट्र क्राईम्स
मुंबई, 05 जनवरी 2022

संपादकीय

बारबाडोस अब होगा गणतंत्र देश

बारबाडोस की गवर्नर जनरल अब सैंड्रा मेसन होंगी, जिनकी नियुक्ति क्वीन एलिजाबेथ द्वितीय ने ही की है. मेसन अटॉनी और जज भी रही हैं. उन्होंने वेनेजुएला, कोलंबिया, चिली और ब्राजील के राजदूत के तौर पर काम भी किया है. वह मंगलवार रात्रि में राष्ट्रपति पद की शपथ लेंगी. इस तरह बारबडोस ब्रिटेन से अलग होकर 55वां गणतंत्र देश बन जाएगा. इस सबके लिए करीब एक महीने से तैयारी चल रही थी, बारबाडोस ब्रिटिश कॉलोनी के तौर पर अपनी पहचान रखता था. उसको लिटिल इंग्लैंड के तौर पर जाना जाता था. बारबाडोस ने दो तिहाई वोटों के साथ अपना पहला राष्ट्रपति चुन लिया है. इससे पहले कल रात लोग टीवी पर चिपके और वह रेडियो पर लगातार इस बात को सुन रहे थे, वहीं बारबाडोस के पॉपुलर स्कवॉयर पर भी कई लोग इस बात का इंतजार कर रहे थे. जहां पिछले साल ही ब्रिटिश लॉर्ड की मूर्ति हटाई गई थी. इस ऐतिहासिक लम्हे के बाद यहां रहने वाले लोग भी काफी खुश नजर आए, डेनिस एडवर्ड काफी खुश नजर आए, डेनिस पेशे से प्रॉपर्टी मैनेजर हैं. उन्होंने कहा कि वह गुयाना में पैदा हुए लेकिन वह बारबडोस में रहते हैं. वह अपने बेटे को ये ऐतिहासिक लम्हा दिखाने के लिए यहां लाएंगे. बारबाडोस के गणतंत्र होने के उपलध्य में प्रिंस चार्ल्स मौजूद रहेंगे. वह रविवार को बारबडोस पहुंचेगे. इस दौरान उनको 21 तोपों की सलामी भी दी जाएगी. बारबाडोस की आबादी की बात करें तो यहां 3 लाख से ज्यादा लोग रहते हैं. जो कैरेबियाई देशों में सबसे अमीर माना जाता है. यहां की अर्थव्यवस्था टूरिज्म पर निर्भर है. कैरिबियाई देशों में 1970 के बाद ऐसा होना जा रहा है. इससे पहले गुयाना, डोमनिका, त्रिनिदाद और टोबैगो ही गणतंत्र हुए थे.

वैसे तो बारबडोस यूके से 1966 में 300 सालों की गुलामी के बाद आजाद हो गया था. 2005 में बारबडोस ने त्रिनिदाद स्थित कैरिबियाई कोर्ट ऑफ जस्टिस में इस बात की अपील की और लंदन स्थित प्रिवी काउंसिल को हटा दिया. साल 2008 में उसने खुद को गणतंत्र बनाने का प्रस्ताव रखा, लेकिन इसके अनिश्चितकाल के लिए इसे टाल दिया गया. लेकिन पिछले साल नेशनल हीरो स्कवॉयर से इ१३२ँ श्री-ऑरें' लङ्ग१ंङ्ग ठी'२ङ्गल्ल की मूर्ति हटा दी गई.

किसानों को मालामाल करेगी कालानमक की यह खेती, प्रति हेक्टेयर 30 क्विंटल का होगा उत्पादन

नई दिल्ली। अपनी महक, स्वाद और पोषक तत्वों के लिए दुनिया भर में मशहूर काले नमक की कम उपज किसानों के लिए एक बड़ी समस्या है. इस वजह से अधिकांश किसानों में इसे बोने की हिम्मत नहीं है, लेकिन किसानों की यह समस्या जल्द ही हल होने वाली है. बौना काला नमक की खेती कर किसान अपने खेत का लगभग दोगुना उत्पादन दे सकेंगे. इसकी सुगंध, स्वाद और चावल में जितने पोषक तत्व होते हैं, सब कुछ पहले जैसा ही रहेगा. इससे काला नमक की खेती को मजबूती मिलेगी और किसानों को इसका अच्छा लाभ भी मिलेगा.

प्रति हेक्टेयर खेती पर तीस से चालीस हजार रुपये का खर्चा

एक हेक्टेयर काला नमक की खेती में करीब तीस से चालीस हजार रुपये खर्च होते हैं. अच्छी फसल होने पर प्रति हेक्टेयर 25 से 30 क्विंटल धान का उत्पादन होता है, लेकिन बौने काले नमक की खेती से प्रति हेक्टेयर 45 से 50 क्विंटल उत्पादन मिलेगा. खर्चा भी वही रहेगा.

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान दिल्ली (कृअप) पिछले तीन वर्षों से गोरखपुर, सिद्धार्थनगर, बस्ती, संत कबीरनगर, महाराजगंज, कुशीनगर, देवरिया, गोंडा सहित 11 जिलों में अपने कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से धान की कई नई किस्मों की बुवाई कर चुका है.

बौने काले नमक का उत्पादन पिछले तीन वर्षों में सबसे अच्छा रहा है. कृषि विभाग का मानना है कि आईएआरआई जल्द ही बौने धान को अपनी नई प्रजाति घोषित कर सकता है. अगर ऐसा होता है तो यहां के किसानों को काला नमक की खेती से अच्छा लाभ मिलेगा.

इसलिए दो बार उत्पादन होता है

बौने काले नमक के पौधे पुराने की तुलना में लंबाई में बेहद कम होते हैं. काला नमक का पुराना पौधा लंबा होने के कारण हवा के दबाव को सहन नहीं कर पाता था, इससे फसल गिर जाती थी और उत्पादन बहुत कम होता था.

बौने काले नमक की विशेषता

चावल में इसकी सुगंध, स्वाद और पोषक तत्वों की मात्रा भी पुराने काले नमक के बराबर होती है. उत्पादन भी दोगुना है. ऐसे में किसान काला नमक की खेती की ओर आकर्षित होंगे और अगर काला नमक का रकबा बढ़ेगा तो विदेशों में बड़े पैमाने पर इसकी बिक्री करने से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा.

इसलिए एक नई प्रजाति की आवश्यकता

पुराने या पारंपरिक कलानामक का उत्पादन पूषा और अन्य खेतों में अच्छा पाया गया है, लेकिन पूर्वांचल की मिट्टी में उत्पादन अच्छा नहीं है. ऐसा इसलिए है क्योंकि पारंपरिक काला नमक का पौधा बौने काले नमक से लगभग दो गुना लंबा होता है. थोड़ी सी हवा चलने पर यह गिर जाता है. इससे उत्पादन में फर्क पड़ता है. जबकि पौधा छोटा होगा तो फसल नहीं गिरेगी और उत्पादन भी बेहतर होगा. कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा किए गए परीक्षणों में बौने काले नमक का उत्पादन अच्छा रहा है. आईएआरआई बौने चावल के अलावा कई प्रयोगिक किस्मों पर काम कर रहा है. गोरखपुर की मिट्टी में बौना काला नमक अच्छे परिणाम दे रहा है. उम्मीद है कि आने वाले दिनों में इस नई प्रजाति की घोषणा कर दी जाएगी. डॉ. एसके तोमर, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, बेलीपार

पत्नी - जान, क्या तुम मेरे लिए शेर को मार के ला सकते हो...?

पति - नहीं बेबी... कुछ और बताओ! मैं तुम्हारे लिए और कुछ भी कर सकता हूं...!

पत्नी - क्या तुम्हारा व्हाट्सएप चेक कर सकती हूं...?

पति - कहां है वो शेर, जिसके बारे में तुम बात कर रही थी...

❖❖❖

टीपू अपनी बीमार दादी को मोहल्ले के डॉक्टर के पास दिखाने ले गया...

डॉक्टर - मुंह खोलो दादी...

दादी - तुम्हारी बीवी रोज शाम को तुम्हारे पड़ोसी से मिलती है...

बस इससे ज्यादा मेरा मुंह मत खुलवाना....

❖❖❖

दो चूहे पेड़ पर बैठे थे, नीचे से एक हाथी गुजरा, एक चूहा हाथी पर गिर गया...

तभी दूसरा चूहा बोला, ह्रदबा कर रख इसे, मैं भी आता हूं...

❖❖❖

पप्पू- तांत्रिक बाबा, किसी सुंदर लड़की का हाथ पाने के लिए क्या करूं,

तांत्रिक- किसी मॉल के बाहर मेहंदी लगाने का काम शुरू कर दे...

पप्पू- बेहोश

❖❖❖

छात्र - सर जी...

मास्टर - हां बोलो...

छात्र - मैंने जो काम नहीं किया क्या आप उसकी सजा मुझे देंगे...?

मास्टर - नहीं, बिल्कुल नहीं! बोलो क्या बात है?

छात्र - मैंने आज होमवर्क नहीं किया...!!!

❖❖❖

लड़का - मैं तुम्हारे साथ शादी नहीं कर सकता... घर वाले नहीं मान रहे हैं...!

लड़की - तुम्हारे घर में कौन-कौन हैं...?

लड़का - एक पत्नी और दो बच्चे...!!!

❖❖❖

पत्नी (पति से)- तुम मुझे दो ऐसी बातें बोलो, जिनमें से एक को सुनकर मैं खुश हो जाऊं और दूसरी को सुनकर नाराज हो जाऊं।

पति- तुम मेरी जिंदगी हो और दूसरी बात लानत है ऐसी जिंदगी पर

❖❖❖

पति- पत्नी को मूवी देखने जाना था। घर के बाहर पति काफी देर से इंतजार कर रहा था।

पति (चिल्लाते हुए)- अरे और कितनी देर लगाओगी?

पत्नी (गुस्से में)- चिल्ला क्यों रहे हो?

एक घंटे से कह रही हूं कि पांच मिनट में आ रही हूं। समझ में नहीं आता क्या?

❖❖❖

राकेश- यार तू अपनी बीवी को किस नाम से बुलाता है?

रमेश- गूगल डार्लिंग

राकेश- ये कैसा नाम हुआ।

रमेश- क्या करूं, सवाल एक करता हूं और जवाब 100 मिलते हैं।

❖❖❖

PETA ने छिपकर खींची कसाईघर की सीक्रेट तस्वीरें, पर्स के लिए यूं उधेड़ी जाती है जानवरों की चमड़ी

आज के समय में कई तरह के ब्रांड्स लेदर बैग बनाने लगे हैं. इन बैग्स की कीमत उसके चमड़े की क्वालिटी पर निर्भर करती है. जैसी क्वालिटी, वैसा दाम. लोग भी अपने सोशल स्टेटस के हिसाब से इन लेदर बैग्स को खरीदते हैं. इस बीच पेटा ने इंडोनेशिया के एक कसाई घर में सीक्रेट तस्वीरें खींची. इस कसाईघर में लेदर बैग बनाने के लिए जानवरों की चमड़ी उधेड़ी जाती है.

इंडोनेशिया और मलेशिया जैसे देशों में महिलाओं के मन में ब्रांडेड हैंडबैग्स का कितना क्रेज है, ये छिपा हुआ नहीं है. ये महंगे हैंडबैग्स कई जानवरों को मरकर उनकी चमड़ी से बनाए जाते हैं. खासकर छिपकली और सांप इसकी वजह से सबसे ज्यादा मारे जाते हैं. कई महंगे ब्रांड्स जैसे गुची और डिओर आदि के बैग्स सांप और मगरमच्छ के चमड़े से बनाए जाते हैं. ऐसे में इन्हें बनाई जाने वाली जगह की तस्वीरें जारी की गई है.

खुद पेटा ने, जो जानवरों के संरक्षण के लिए काम करती है, ने कसाईघर की सीक्रेट तस्वीरें खींची. इनमें साफ देखा जा सकता है कि कैसे इंडोनेशिया के कसाईघरों में जानवरों को बेरहमी से मारा जाता है. इनकी चमड़ी उधेड़ी जाती है और फिर इसी से प्रॉडक्ट्स बनाए जाते हैं. इनमें से कुछ तस्वीरें इतनी वीभत्स हैं कि उन्हें दिखाया नहीं जा सकता. सबसे शॉकिंग बात तो ये है कि इन जानवरों की चमड़ी इनके जिंदा रहते उधेड़ी जाती है.

इस स्ट्रिंग ऑपरेशन में सामने आया कि जानवरों को बेतहाशा टॉर्चर किया जाता है. छिपकली के चमड़े से लेदर पर्स, बेल्ट, वॉलेट और दूसरे फैशनेबल आइटम्स बनाए जाते हैं.

कुछ वीडियोज में छिपकली का सिर काटने के बाद उसे छटपटाते देखा गया. इस स्टिंग ऑपरेशन के बाद पेटा ने इन कसाईघरों के खिलाफ एक्शन लिया है. साथ ही लोगों से भी रिक्वेस्ट की है कि वो जानवरों की स्किन से बने प्रॉडक्ट्स का इस्तेमाल ना करें.

अमिताभ बच्चन के पास अरबों की संपत्ति, फिर भी गरीबी में जी रहा 'महानायक' का एक परिवार

मुंबई, बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन आज किसी परिचय के मोहजात नहीं है। अमिताभ उन लोगों में से हैं जिन्होंने कड़ी मेहनत के बाद दौलत-शौहरत कमाई और 79 साल की उम्र में भी उसी पैशन के साथ काम कर रहे हैं। बॉलीवुड के शहंशाह कहने जाने वाले ह्यबिग बीह्व के पास अरबों की संपत्ति है। उनके पास करोड़ों के कई बंगले और महंगी गाड़ियां है, लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि सबसे अमीर अभिनेताओं में गिने जाने वाले अमिताभ का एक परिवार गरीबी के साए में जिंदगी बिताने को मजबूर है।

अमिताभ बच्चन के परिवार, में पत्नी जया बच्चन, अभिषेक बच्चन (बेटे), ऐश्वर्या राय बच्चन (बहू), अराध्या बच्चन (पोती) को तो सभी जानते हैं लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि बिग बी की बुआ भी हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अमिताभ बच्चन की बुआ के बेटे का नाम रामचंदर था और उनके बेटे अनूप रामचंदर हैं, जिनकी हालत आज बहुत खराब हो चुकी है। वह पाई-पाई को मोहताज है।

अनूप रामचंदर की हालत पहले ऐसी नहीं थी, वह भी धनवान हुआ करते थे। हालांकि समय के साथ पैसे खत्म होते गए और अब उनका परिवार गरीबी में जिंदगी गुजार रहा है। परिवार में अमिताभ बच्चन जैसा बड़ा नाम होने के बावजूद आज वह गरीबी में जी रहे हैं। एक समय था जब बच्चन परिवार और अनूप का परिवार काफी करीब हुआ करता था लेकिन एक विवादित जमीन के चलते रिश्तों में खटास आ गई।

दरअसल, एक पुश्तैनी मकान को लेकर दोनों परिवारों के बीच अनबन बढ़ गई। दैनिक भाष्कर की रिपोर्ट के मुताबिक इस घर को अनूप, हरिवंश राय बच्चन की याद में एक संग्रहालय का रूप देना चाहते हैं, लेकिन अमिताभ बच्चन की इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। इस घर को लेकर विवाद की मुख्य वजह तो स्पष्ट नहीं है लेकिन महानायक ने जमीन और घर को लेकर अनूप के परिवार से दूरी बना ली।

पाकिस्तान में शिकार खेलने आने वाले अरब शेखों पर अब क्यों उठे सवाल?

'माफी उन्हें मांगनी चाहिए जिनकी गलती है. मेरा अल्लाह गवाह है मेरी गलती नहीं है. अगर मुझे कुछ होता है तो वो लोग ज़िम्मेदार होंगे जो मुझे धमकी दे रहे हैं.'

ये बयान 27 वर्षीय नाज़िम जोखियो ने वीडियो रिकॉर्ड करके मरने से एक दिन पहले फेसबुक पर पोस्ट किया था.

इस बयान को रिकॉर्ड करने की वजह बताते हुए नाज़िम ने वीडियो में कहा कि गांव के अंदर तल्लूर के शिकार को लेकर उनका एक विदेशी काफि ले से झगड़ा हो गया था और बात हाथापाई तक पहुंच गयी थी. नाज़िम ने इस घटना का वीडियो बनाया, उनके अनुसार जिस पर बाद में उन्हें इसे डिलीट करने के लिए धमकी दी गई.

जिन लोगों के साथ नाज़िम का झगड़ा हुआ था, वे एक अरब शेख के काफि ले का हिस्सा थे और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के प्रांतीय असेंबली के सदस्य जाम ओवैस के मेहमान थे.

बात को आगे बढ़ने से रोकने के लिए नाज़िम का भाई अफजल जोखियो उन्हें वडेरे के फार्महाउस पर ले गए, जहां ये विदेशी मेहमान भी ठहरे हुए थे. 'मैंने उससे कहा कि तुम्हें एक या दो थप्पड़ मारेंगे, तो तुम चुपचाप खा लेना और माफी मांग लेना.'

अफजल ने कहा कि जब वह फार्महाउस पहुंचे तो उन्हें कहा गया कि अपने भाई को वहीं छोड़ जाएं और सुबह आना. जब मैं सुबह पहुंचा तो मुझे बताया गया कि तुम्हारे भाई की मौत हो गई है. मुझे समझ नहीं आया कि ऐसा कैसे हो सकता है.'

कुछ ही देर बाद पुलिस ने उसी फार्महाउस से नाज़िम का क्षत-विक्षत शव बरामद किया. नाज़िम की हत्या का मामला इस समय अदालत में विचाराधीन है और सिंध प्रांत के ज्यादातर हिस्सों में इस हत्या का विरोध हो रहा है.

अस्सी और नब्बे के दशक में, तल्लूर के शिकार के लिए बलूचिस्तान के पिछड़े इलाकों में आए शाही परिवार के काफि ले पर बलूच अलगाववादी समूहों द्वारा हमले किये गए. लेकिन यह पहली बार है कि सिंध प्रांत के विभिन्न हिस्सों में लोगों ने बड़ी संख्या में विरोध प्रदर्शनों दर्ज कराने के साथ-साथ तल्लूर के शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की भी मांग की है. और इस दौरान ज्यादातर सवालों का रुख इसी तरफ है कि आखिर पाकिस्तान अपनी विदेश नीति में तल्लूर के शिकार को इतना महत्व क्यों देता है.

इसके बारे में संयुक्त अरब अमीरात में पाकिस्तान के पूर्व राजदूत ने बीबीसी को बताया, कि 'पाकिस्तान सद्भावना के तौर पर एक खेल या शौक को प्रोमोट करता है, क्योंकि हमारे पास भारत की तरह नाइट क्लब नहीं हैं जहां हम इन खाड़ी देशों से आने वाले शाही परिवार के सदस्यों को लें जाएं.'

इसलिए तल्लूर के शिकार को प्रोमोट करने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिए. यह अरब संस्कृति का हिस्सा है और ये पाकिस्तान और इन देशों के बीच संबंधों को बेहतर रखने का भी एक तरीका है.

नाम न छापने की शर्त पर, पूर्व राजदूत ने कहा, 'सिंध और बलूचिस्तान में शिकार के मैदान आवंटित करना हमेशा से एक समस्या रही है. इसका निर्धारण बहुत सोच समझ कर करना पड़ता है और पाकिस्तान की हमेशा कोशिश रही है कि अपने मेहमानों के लिए अच्छी से अच्छी व्यवस्था की जाये.

इस शिकार की अहमियत और विदेश नीति से इसके संबंध का अंदाजा एक और घटना से लगाया जा सकता है. पत्रकार स्टीव कोल ने अपनी किताब 'घोस्ट वॉर्स' में लिखा है कि फरवरी 1999 में एक अमीराती शेख तल्लूर का शिकार करने के लिए अपने काफि ले के साथ दक्षिणी अफगानिस्तान पहुंचे. इसी बीच, अमेरिका की सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसी यानी सीआईए को पता चला कि अमीराती शेख के इस काफि ले में अमेरिका का वांटेड अल-कायदा के नेता ओसामा बिन लादेन, भी शामिल है, और शेख के कैंप में रह रहे हैं.

स्टीव कोल लिखते हैं कि 'एजेंसी ने उस समय क्रूज मिसाइलों से ओसामा बिन लादेन को मारने की योजना बनाई थी, लेकिन अमीराती शेख की मौजूदगी के कारण इस प्लान को रोकना पड़ा. यानी राजनयिक संबंध खराब न करने के लिए अमेरिका ने अपने मोस्ट वांटेड टारगेट को भी हाथ से जाने दिया.'

जाहिरी तौर पर मासूम सा दिखने वाले इस तल्लूर की खाड़ी देशों से आने वाले अरब शेखों के लिए बहुत अहमियत है. मध्य पूर्व के शाही परिवार इसके शिकार को एक खेल और शौक के रूप में देखते हैं, एक सामान्य धारणा यह भी है कि इसका मांस वासनापूर्ण होता है, हालांकि इस धारणा का वैज्ञानिक रिसर्च से कोई लेना-देना नहीं है.

पाकिस्तान हर साल अरब शेखों के इस शौक को जारी रखने के लिए परमिट जारी करता है, जिसमें कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और बहरीन से अरब शेख पाकिस्तान आते हैं.

इस साल अक्टूबर में, विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तान के सिंध, पंजाब और बलूचिस्तान प्रांतों में अकेले अबू धाबी से आने वाले शाही परिवार के 11 सदस्यों को शिकार परमिट जारी किया है. शाही परिवार के ये सदस्य हर साल की तरह नवंबर से फरवरी तक तल्लूर के शिकार के लिए पाकिस्तान आएंगे.

इसके अलावा, शाही परिवार के साथ आने वाले बाज के परमिट की फीस भी पहले से तय होती है, एक बाज के लिए एक हजार डॉलर फीस ली जाती है. बाज के प्रशिक्षण के लिए, बाज की गति का परीक्षण करने के लिए बाज के सामने कबूतर उड़ाया जाता है कि वह कितनी तेजी से कबूतर को दबोच सकता है और बाज के इस प्रशिक्षण के लिए स्थानीय लोगों को विशेष तौर पर मुआवजा दिया जाता है.

वन्यजीव विभाग के एक अधिकारी ने कहा, कि 'अगर हम चाहें भी तो इस सिलसिले को रोका नहीं जा सकता, क्योंकि यह पाकिस्तान के लिए खाड़ी में अपने संबंध बनाए रखने का एक तरीका है.'

इसमें एक अंतर स्पष्ट करना जरूरी है कि वर्तमान में तल्लूर के शिकार के लिए शाही परिवार के सदस्य पाकिस्तान दो तरह से आते हैं. एक सरकार द्वारा दिए गए निमंत्रण के आधार पर और दूसरा वडेरों और दोस्तों के साथ व्यक्तिगत संपर्क के आधार पर.

पाकिस्तान के एक पूर्व सैन्य तानाशाह ज़िया-उल-हक से संबंधित एक मशहूर किस्सा है, कि उन्होंने बहुत कोशिश करके चागी में आये एक सऊदी मंत्री से मिलने के लिए समय निकाला, जबकि उन सऊदी मंत्री ने सभी प्रोटोकॉल को नजरअंदाज करते हुए, बहुत ही सर्द व्यवहार रखा.

जिस दौरान सऊदी मंत्री दौरे पर आये हुए थे डेरा बुगती जिले में एक अन्य सऊदी समूह भी शिकार के लिए आया हुआ था, जिन पर कुछ लोगों ने हमला कर दिया था. ज़िया-उल-हक, सऊदी मंत्री से मिलकर, इस घटना पर आ रही सऊदी प्रतिक्रिया को संभालने की कोशिश कर रहे थे. लेकिन सऊदी मंत्री राष्ट्रपति कार्यालय से आने वाली फोन कॉल्स नहीं उठा रहे थे.

बीबीसी से बात करते हुए, बलूचिस्तान के पूर्व सचिव अहमद बख़्श लहरी ने कहाः 'इससे एक अंदाजा यह भी होता है कि ज्यादतर खाड़ी देशों के शाही परिवार के सदस्य इन यात्राओं के दौरान राजनीतिक बातचीत नहीं करना चाहते हैं. ऐसा न करने का मुख्य कारण किसी भी तरह के विवाद को पैदा होने से रोकना है.

उन्होंने ये किस्सा अपनी किताब 'ऑन द मिड-ट्रैक' में भी लिखा है जो उनके संस्मरणों पर आधारित है.

महाराष्ट्र क्राईम्स
मुंबई, 05 जनवरी 2022

सर्द रात के बीच मुख्यमंत्री पद के दावेदार नेता का कत्ल

...और हिल गया पूरा देश

साल 1997 में जब उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन था और प्रदेश का कोई भी राजनीतिक दल इस स्थिति में नहीं था जो अपना बहुमत सिद्ध कर सके। इन सबके बीच एक भाजपा नेता था जो बसपा की मायावती के साथ समीकरण दुरुस्त कर रहा था और गठबंधन की सरकार बनवाने के प्रयास में था। लेकिन 1997 की 10 फरवरी को इस कद्दावर नेता की राजनीति और सांसे दोनों रोक दी गई और नेता का नाम था ब्रह्मदत्त द्विवेदी।

जनता के बीच थी गहरी पैठः ब्रह्मदत्त द्विवेदी उत्तर प्रदेश के ऐसे नेता थे जिन्हें मुख्यमंत्री पद का दावेदार माना जा रहा था लेकिन शायद विधि के विधान को कुछ और ही मंजूर था। द्विवेदी अपने मिलनसार व्यक्तित्व के चलते सभी के प्रिय थे और जनता के बीच उनकी गहरी पैठ थी। पार्टी का हर नेता उनकी इज्जत करता था। 90 के दशक में तेजी से उभरे ब्रह्मदत्त, अपने क्रियाकलापों और राजनीतिक चपलताओं के चलते पार्टी के बड़े नेताओं के काफी करीब हो चले थे। अटल बिहारी बाजपेयी-आडवाणी से लेकर हर छोटा कार्यकर्ता द्विवेदी को जानता था।

किस प्रधानमंत्री के थे प्रियः जनता का नेता, कवि और वकील की दुरुस्त छवि वाले ब्रह्मदत्त के कूटनीतिक कौशल को राम मंदिर आंदोलन के समय पहचाना गया। वहीं गेस्ट हाउस कांड के बाद से तो पूर्व पीएम अटल बिहारी

बाजपेयी भी उनकी ताकत को पहचान गए थे। लेकिन द्विवेदी का सफर उस वक्त रुक गया जब वे फरवरी की सर्द रात के बीच अपने शहर फरुर्खाबाद में एक कार्यक्रम से वापस लौट रहे थे।

क्या हुआ था 10 फरवरी की रातः साल 1997 और तारीख थी 10 फरवरी। कार्यक्रम में शामिल होने के बाद ब्रह्मदत्त द्विवेदी कार से चले जा रहे थे कि तभी बाइक सवार कुछ बदमाश हथियार से लैश होकर वहां पहुंचे और बिना वक्त बर्बाद किए गाड़ी पर फायरिंग करने लगे। कार के अंदर बैठा कोई शख्स कुछ समझ पाता कि पल भर में ही गाड़ी को गोलियों से छलनी कर दिया गया। सीएम पद के दावेदार माने जा रहे शख्स की हत्या की खबर पूरे देश में फैल गई।

पूर्व पीएम भी हुए अंतिम यात्रा में शामिलः द्विवेदी के मौत के बाद जनता सड़क पर थी और अटल-आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी जैसे नेता ब्रह्मदत्त की अंतिम यात्रा में शामिल होने के लिए पहुंचे थे। मामले में द्विवेदी के परिवार ने 4 लोगों पर नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई। इस रिपोर्ट में शहर के ही विधायक विजय सिंह के अलावा तीन और अज्ञात लोगों के नाम थे। छिपते-छिपाते विजय को दिल्ली से पकड़ लिया गया और फिर उसके साथियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। कई सालों तक चले इस मुकदमें में साल 2003 में फैसला आया और विजय समेत दो अन्य आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। इसके बाद विजय को जमानत भी मिली, लेकिन 2017 में हाईकोर्ट ने सीबीआई कोर्ट की सजा बरकरार रखते हुए फिर से जेल भेज दिया। वहीं इस मामले में कई अन्य आरोपी सबूत न होने के चलते छूट भी गए।

सिख परिवार की जान बचाने के लिए कुरान की कसम खाई

जब एक मुस्लिम अफसर के बेटे ने : भारत विभाजन

भारत के बंटवारे से पहले लाहौर की एक स्थानीय मस्जिद के इमाम ने एक सरकारी अधिकारी के बेटे से पूछा कि कई दिनों से इलाके में खबर चल रही है कि आपने अपने घर में किसी को पनाह दी हुई है. कौन है वो?

मस्जिद के इमाम को उनकी बात पर शक हुआ और उन्होंने कुरान मंगाकर उस अधिकारी के बेटे से कहा कि इसकी कसम खाओ कि आपके घर में आपका भाई और उनका परिवार रह रहा है. जिस पर सरकारी अधिकारी कुरान की कसम खाते हैं कि जिसे मैंने घर में पनाह दी है वह मेरा भाई है.

भारत के विभाजन के समय, हिंदू, सिख और मुसलमान, वर्तमान पाकिस्तान और भारत में, जहां जहां भी वे अल्पसंख्यक थे बहुसंख्यकों के प्रकोप का शिकार हुए थे. बलवाइयों के जत्थे अपने-अपने इलाकों से प्रवास करने वालों पर हमला करते थे. कुछ खुशनसीब प्रवासी अपने इलाकों को छोड़कर सही सलामत ज़िंदा विस्थापन करने में सफल रहे और कई को अपनी जान और माल गंवाना पड़ा.

जहां ज्यादातर लोग अल्पसंख्यकों पर हमला कर रहे थे, वहीं कई ऐसी घटनाएं भी मौजूद हैं जिनमें हिंदुओं और सिखों ने मुसलमानों की जान-माल की रक्षा की और मुसलमानों ने अपनी जान जोखिम में डालकर हिंदुओं और सिखों की मदद की.

लाहौर की घटना के बारे में कई सालों से भारत और फिर अमेरिका में जबानी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बताया जाता रहा है, जिसमें एक मुस्लिम सरकारी अधिकारी कुरान की कसम खाता है कि उनके घर में उनका भाई अपने परिवार के साथ रह रहा है.

डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया ने अपने बचपन में इस घटना के बारे में इतनी बार सुना था कि उनको इसके सारे किरदार, इलाके और दृश्य जबानी याद हो गए थे. कई साल बाद वह इस घटना की पृष्ठभूमि और अन्य घटनाओं को जानने के लिए कई बार पाकिस्तान के पंजाब, लाहौर और गुजरांवाला का दौरा कर चुके थे.

डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया का कहना है कि जिसने कसम खायी थी उसने झूठी कसम नहीं खायी थी, बल्कि उसने कीमती इंसानी ज़िन्दगियों को बचा कर इंसानियत को ज़िंदा किया था और जिस व्यक्ति के लिए उन्होंने कसम खायी थी वह वास्तव में उनका भाई था. वे आपस में भाई बने हुए थे. कसम खाने वाले ने जिसको भाई बनाया था अपनी जान जोखिम में डालकर उसकी रक्षा की थी.

इससे पहले कि हम भारत के विभाजन की इस घटना के बारे में और अधिक

जाने उससे पहले ये देखते हैं कि डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया और उनका परिवार कौन है.

डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया का परिवार विभाजन के समय गुजरांवाला से भारत आया था. डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया कई सालों से अमेरिका में रह रहे हैं.

डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया के पूर्वज पंजाब के शासक महाराजा रणजीत सिंह के दरबार से जुड़े हुए थे. विभाजन से पहले, उन्हें क्षेत्र का बहुत बड़ा जागीरदार माना जाता था. गुजरांवाला के बोताला गांव में उनकी जमीन थी. इसलिए डॉक्टर तरुणजीत सिंह आज भी अपने नाम के साथ बोतालिया लगाते हैं.

भारत के विभाजन के बाद भी, पाकिस्तान में कई सैन्य और नागरिक अधिकारियों के परिवारों के साथ उनके व्यक्तिगत संबंध थे.

डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया के दादा कैप्टन अजीत सिंह लाहौर के एचिसन कॉलेज के छात्र थे. बहावलपुर के पूर्व नवाब, नवाब सादिक खान, जनरल मूसा खान और अन्य महत्वपूर्ण शख्सियतों के दोस्त और सहपाठी थे, जबकि उनकी दादी नरेंद्र कौर इलाके की एक प्रसिद्ध राजनीतिक और सामाजिक शख्सियत थीं.

डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया कहते हैं कि मेरी दादी मुझे हमेशा भारत के विभाजन के समय की कहानियां सुनाती थीं. वह कहती हैं कि जब विभाजन का समय आया और दंगे भड़क उठे, तो उस समय लाहौर में रहने वाले एक मुस्लिम सरकारी अधिकारी और उनकी पत्नी ने उन्हें दो महीने तक पनाह दी थी.

उस दौरान पनाह देने वाले परिवार ने न केवल खुद मुश्किलों का सामना किया था बल्कि उस परिवार ने इंसानियत की वो मिसाल कायम की थी जिस पर मैंने न केवल एक किताब लिखी है बल्कि उस परिवार को खोजने के लिए कई साल तक कोशिश करता रहा.

डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया कहते हैं कि मैंने अपने शोध और अपने पूर्वजों से जो कुछ सुना उसके आधार पर एक किताब लिखी. इस किताब के लिए शोध करते हुए मैंने लाहौर, गुजरांवाला और बोताला में अपने पूर्वजों की हवेली का भी दौरा किया. मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि वहां अब लड़कियों का स्कूल है.

वो कहते हैं कि, ह्लमैंने अपनी किताब में अपने पूर्वजों से सुनी हुई कहानियां लिखी थीं. ये किताब लाहौर में मौजूद एक प्रोफेसर कैलाश ने पढ़ी. प्रोफेसर कैलाश खुद भी एक इतिहासकार और शोधकर्ता हैं.

वो कहते हैं कि जब मैं उनसे मिला तो किताब में लिखी घटनाओं के आधार पर उन्होंने मुझे बताया कि यह परिवार मुस्लिम लीग के सांसद महमूद बशीर वर्क का परिवार है. डॉक्टर तरुणजीत सिंह बोतालिया ने कहा कि इसके बाद मैंने महमूद बशीर अहमद वर्क से संपर्क किया. उन्हें इस पूरी कहानी के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी, सिवाय इसके कि उनके पूर्वजों ने भारत के विभाजन के दौरान कई हिंदुओं और सिखों की मदद करके उनकी जान बचाई थी.

कंगाली का ऐसा आलम, कर्ज लेते हुए 'टर्म्स और कंडीशन' भी नहीं पढ़ रहा पाकिस्तान? सऊदी अरब से इन शर्तों पर लिया पैसा

पाकिस्तान के आर्थिक संकट और रिकॉर्ड स्तर पर लिए जाने वाले कर्ज को ध्यान में रखते हुए इस बार सऊदी अरब ने उसे बेहद कड़ी शर्तों के साथ कर्ज दिया है. शर्तें ऐसी हैं कि शायद ही कोई देश इनपर कर्ज ले. इसलिए कहा जा रहा है कि पीएम इमरान खान ने शायद कर्ज लेते वक्त शर्तें नहीं पढ़ीं. हालांकि पाकिस्तान ने 4.2 अरब डॉलर के कर्ज का समझौता कर लिया है. पाकिस्तान के सूचना मंत्री फवाद चौधरी (त्र्ह्वंर् उँॅ१८) के अनुसार, सऊदी अरब ने पाकिस्तान को एक साल के लिए 3 अरब डॉलर की नकद जमा राशि देने पर सहमति जताई है, जिसमें कहा गया है कि देश तीन दिन के नोटिस पर इसे किसी भी समय वापस करने के लिए बाध्य होगा.

स्थानीय मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, सऊदी अरब पाकिस्तान के फाइनेंशियल सपोर्ट को रिवाइव करने को तैयार हो गया है. जिसके चलते इमरान खान की कैबिनेट ने 3 अरब डॉलर सुरक्षित जमा (कैश रिजर्व) और 1.2 अरब डॉलर मूल्य की तेल आपूर्ति डैफर्ड पेमेंट पर लेने के लिए हामी भरी है. पिछले महीने इमरान खान सऊदी अरब के दौरे पर गए थे, तभी इस समझौते पर बात हुई. यहां मजे की बात ये है कि ये कैश रिजर्व (उंर् फीरी१५ी) सिर्फ दिखाने के लिए है, खर्च करने के लिए नहीं. इमरान सरकार इसे चाहकर भी खर्च नहीं कर सकते. यह पैसा सिर्फ साख यानी बैंक में दिखावे के लिए होगा.

अतीत के विपरीत, इस बार पाकिस्तान के पास रोलओवर का कोई विकल्प नहीं है और उसे एक साल बाद कर्ज वापस करना होगा. इस दौरान पाकिस्तान से कोई गलती होती है, तो सऊदी के लिखित अनुरोध पर उसे 72 घंटे के भीतर पैसा लौटाना पड़ सकता है. पाकिस्तान के वित्त मंत्रालय का हवाला देते हुए मीडिया रिपोर्ट्स में बताया गया है कि 3 अरब डॉलर पर 4 फीसदी की दर से ब्याज देना होगा (ढं'२३ल्ल रं४ अष्ठं छ्व्ल्ल). यह पिछली बार मिली मदद से एक चौथाई ज्यादा है. तब इसकी दर 3.2 फीसदी थी. इसका मतलब ये हुआ कि पाकिस्तान को कर्ज पर 120 मिलियन डॉलर का ब्याज देना होगा. इन शर्तों पर पाकिस्तान के लोग काफी नाराजगी जता रहे हैं.

सूत्रों के हवाले से पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है, 'सऊदी अरब ने डिफॉल्ट होने की स्थिति पर शर्तें रखी हैं, वह तुरंत कैश डिपोजिट निकाल सकता है. समय पर ब्याज भुगतान में देरी को समझौते का डिफॉल्ट माना जाएगा.' सऊदी अरब की तरफ से इस बार कड़ी शर्तें इसलिए भी रखी गई हैं क्योंकि पिछली बार पाकिस्तान को उसका एक बिलियन अमेरिकी डॉलर लौटाने में दिक्कतें आई थीं. उस वक्त पाकिस्तान को अपने तथाकथित सदाबहार दोस्त चीन से पैसे लेकर सऊदी को देने पड़े. पाकिस्तानी मंत्रालय (ढं'२३ल्ल द्रल्ल२३१८) की एक रिपोर्ट से पता चला है कि सऊदी अरब ने पाकिस्तान को 2018 में तीन साल के लिए 6.2 बिलियन डॉलर का वित्तीय पैकेज दिया था. उसने इसे लौटाने के लिए अधिक वक्त देने से इनकार कर दिया. तब पाकिस्तान ने चीन से कर्ज लेकर सऊदी को लौटाया.

कॉमेडियन को शो न करने की मिली धमकी,नफरत जीत गई, आर्टिस्ट हार गया

मुंबई. स्टैंडअप कॉमेडियन मुनव्वर फारूकी को घर्म के कट्टरपंथियों के द्वारा परेशान हो कर छोड़ा स्टाजे शो ,और सोशल मीडिया पर एक लंबा नोट शेयर किया है। मुनव्वर ने अपने स्टेज करियर को खत्म करने की घोषणा की है। इसके बाद एक्ट्रेस स्वरा भास्कर मुनव्वर फारूकी के सपोर्ट में आ गई हैं। स्वरा भास्कर ने सोशल मीडिया पर मुनव्वर फारूकी से माफी तक मांगी है।

स्वरा भास्कर ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'नफरत और कट्टरता हमेशा एक मुखर, पढ़े-लिखे, प्रतिभाशाली और तार्क करने वाले से नफरत करती है। ये लोग अपनी पहचान से परे लोगों से जुड़ते हैं। मुनव्वर, उमर और अन्य ऐसे मुखर मुस्लिम हिंदुत्व के लिए एक बड़ा खतरा है।' दूसरे ट्वीट में स्वरा भास्कर ने लिखा, 'ये दिल तोड़ने वाला और शर्मनाक है। बतौर एक समाज हम बदमाशी, बुलींग को सामान्य बना दिया है। हमें माफ करना मुनव्वर।'

मुनव्वर फारूकी ने सोशल मीडिया पर नोट लिखकर बताया कि पिछले दो महीने में उनके 12 शो कैंसिल हो चुके हैं। फारूकी ने कहा कि नफरत जीत गई, आर्टिस्ट हार गया। मेरा काम हो गया! अलविदा! अन्याय। आज बेंगलुरु शो कार्यक्रम स्थल में तोड़फोड़ करने की धमकी के तहत रद्द किया गया।'

मुनव्वर ने आगे लिखा, 'हमने 600 से ज्यादा टिकट बेचे थे। उन्होंने कहा कि इस शो को भारत में लोगों से इतना प्यार मिला है, चाहे उनका धर्म कुछ भी हो। मुनव्वर फारूकी ने यह भी कहा कि उनके पास शो के लिए 'सेंसर सर्टिफिकेट' है, लेकिन पिछले दो महीनों में धमकियों के कारण बारह शो रद्द कर दिए गए।'

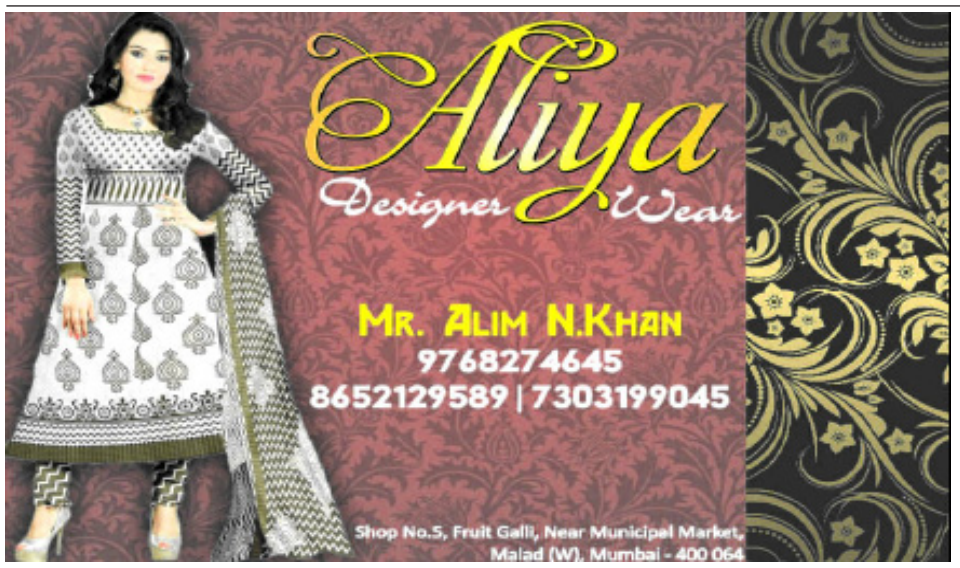

'मैंने ही 1971 की जंग में आपके बेटे को शहीद किया था...' एक ऐसा कबूलनामा जिसने एक ब्रिगेडियर को हिला दिया, रोंगटे खड़े कर देगी

मुकेश खेत्रपाल अब 71 वर्ष के हैं, जबकि उनके बड़े भाई अरुण 21 साल के! इसी उम्र में वह अमर जो हुए थे। दीवार पर उनकी एक तस्वीर लगी है, सेना की वर्दी में, चेहरे पर मनमोहक मुस्कान। मुकेश मुस्कुराते हैं, 'मैं बूढ़ा हो गया लेकिन अरुण कभी नहीं होंगे।' उन्हें 1971 की दिल्ली की वो सर्द रात आज भी अच्छे से याद है। मुकेश तब आईआईटी दिल्ली में पढ़ते थे और अरुण की अहमदनगर में चल रही ऑफिसर्स ट्रेनिंग युद्ध की वजह से रुक जाती है। दूसरे सभी अफसरों की तरह अरुण को मोर्चे के लिए आने को कह दिया जाता है। वह पिता से गिफ्ट में मिली अपनी प्यारी जावा मोटरसाइकिल के साथ दिल्ली के लिए ट्रेन पकड़ लेते हैं।

चूंकि उन्हें कुछ ही घंटे में जम्मू के लिए पंजाब मेल पकड़नी थी, इसलिए उन्होंने दिल्ली में अपनी बाइक उतारकर उसी से घर जाने का फैसला किया।

मुकेश याद करते हैं, 'मैं उस दिन घर पर ही था। अरुण ने अपनी बाइक खड़ी की और अंदर आ गए। सेना की वर्दी में वह बहुत ही ज्यादा हैंडसम लग रहे थे।'

खेत्रपाल परिवार ने उस रात जल्दी डिनर किया। डिनर टेबल पर खेत्रपाल की मां ने उनसे जो कुछ कहा वो आगे चलकर सेना की लोककथाओं का अभिन्न हिस्सा बन गया। बिल्कुल किसी किवदंती की तरह। उन्होंने कहा, 'शेर की तरह लड़ना अरुण, कायर की तरह वापस मत आना।' अरुण ने मां की आखों में झांका और मंद-मंद मुस्कुरा दिए।

दिसंबर के शुरूआती दिन बहुत तनाव भरे रहे। मुकेश याद करते हैं, 'हमारे पास हिताची का एक इम्पोर्टेड ट्रांजिस्टर था। हम हर वक्त उससे चिपके रहते थे। रेडियो सिलोन सुना करते थे जो युद्ध की विस्तार से रिपोर्टिंग कर रहा था। कभी-कभी सिग्नल अच्छा रहता था और कभी-कभी तो इतना खराब कि बमुश्किल कुछ सुनाई देता था। लेकिन हम सभी उसी के पास चिपके रहते थे।'

1971 की जंग के हीरो शहीद अरुण खेत्रपाल

16 दिसंबर की शाम को रेडियो सिलोन ने खबर दी कि शकरगढ़ में बहुत ही जबरदस्त टैंक युद्ध हुआ है। मुकेश बताते हैं, 'हमें पता था कि अरुण की रेजिमेंट उसी एरिया में तैनात है। खबर सुनकर तो जैसे हमारा दिल ही बैठ गया।'

अगली ही सुबह एक ऐलान होता है कि प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने युद्धविराम की घोषणा कर दी है। जंग खत्म हो चुकी थी। मुकेश याद करते हैं, 'यह बहुत बड़ी राहत वाली बात थी। मेरी मां अरुण के कमरे की साफ-सफाई में जुट गईं और हम उनके आने के दिन का इंतजार करने लगे।'

तभी 19 दिसंबर को दरवाजे पर एक दस्तक होती है। डोरबेल बजी। मां ने दरवाजा खोला तो सामने पोस्टमैन था। मुकेश कहते हैं, 'उस टेलिग्राम ने हमारी जिंदगियों को सदा-सदा के लिए बिखेर कर रख दिया। उसके बाद हमारी जिंदगियों में एक उदासी तारी हो गई। मेरी मां ने खुद को एक तरह से घर में कैद कर लिया। मेरे ब्रिगेडियर पिता शांत रहने लगे और अपना ज्यादातर वक्त खुद को अपनी कोठरी में कैद कर बिताने लगे।'

एक-एक पल ऐसे बीतता था जैसे कोई युग बीत रहा हो। ऐसे ही 30 साल गुजर गए। परिवार ने धीरे-धीरे उस सच को कबूल कर लिया। इस दौरान मुकेश ने आईआईटी की पढ़ाई पूरी कर ली, नौकरी पा ली, शादी भी हो गई साथ में एक प्यारी सी बेटी भी।

तभी एक दिन, मुकेश और मिसेज खेत्रपाल तब हैरान रह गए जब उन्होंने ब्रिगेडियर खेत्रपाल को फिर से मुस्कुराते देखा। मुकेश बताते हैं, 'उन्होंने कहा कि वह सरगोधा जा रहे हैं, अपने पैतृक स्थान जो पाकिस्तान में है और जहां बंटवारे के पहले तक उनका परिवार रहा करता था।'

मुकेश और मिसेज खेत्रपाल ने ब्रिगेडियर खेत्रपाल को मनाने की हर मुमकिन कोशिश की। वह बताते हैं, 'हम दोनों ने उनसे कहा- आप 81 साल के हैं। इस उम्र में कहां जाएंगे? लेकिन उन्होंने हमारी एक न सुनी।'

ब्रिगेडियर खेत्रपाल ने कहा, 'मैं अपने कॉलेज के एक साथी (बहुत ही जूनियर) के यहां ठहरूंगा जो पाकिस्तान आर्मी में अफसर है और लाहौर में रहता है।'

मुकेश याद करते हैं, 'उससे हमें थोड़ी तसल्ली मिली। और आखिरकार वह दिन भी आ गया जब हम उन्हें एयरपोर्ट छोड़ने पहुंचे जहां उन्हें एयर इंडिया की फ्लाइट पकड़नी थी। वह किसी स्कूली बच्चे की तरह रोमांचित थे।'

3 दिन बाद मुकेश अपने पिता को रिसीव करने के लिए एयरपोर्ट पहुंचे। उन्हें अच्छे से याद है, 'पापा बहुत शांत और खोए-खोए से लग रहे थे। यहां तक कि घर पर भी उन्होंने अपने दौरे के बारे में हमसे कोई बात नहीं की, जिससे हमें हैरानी हुई।'

एक हफ्ते बाद, मुकेश इंडिया टुडे मैगजीन पढ़ रहे थे और अचानक उनकी नजर एक आर्टिकल पर पड़ी। उसमें उनके पिता की पाकिस्तान यात्रा की बात थी। उनकी पाकिस्तानी सेना के उस अफसर से मुलाकात की बात थी जिसकी वजह से उनके बेटे की जान गई थी। आर्टिकल पढ़ मुकेश सन्न रह गए और बेसब्री से अपने पिता के पास पहुंचे। पहुंचते ही पूछा, 'मैंने अभी जो कुछ पढ़ा है, क्या वह सच है?' ब्रिगेडियर खेत्रपाल बोले- हां, सच है।

मुकेश आगे बताते हैं, 'जब मेरी मां और मैंने उनसे पूछा कि ये बातें हमसे क्यों नहीं बताई तो उन्होंने कहा कि क्या ही बताता। वो कोई अच्छी बात तो थी नहीं।' उसके बाद ब्रिगेडियर खेत्रपाल ने लाहौर में क्या-क्या हुआ, जब ये बताया तो उसे सुनकर मिसेज खेत्रपाल और मुकेश सन्न रह गए।

1 मार्च 2001। जगह- लाहौर। डिनर के बाद ब्रिगेडियर खेत्रपाल कुर्सी पर बैठे हुए आराम कर रहे थे। सामने उनके मेजबान रिटायर्ड ब्रिगेडियर ख्वाजा मोहम्मद नसीर थे। पाकिस्तानी सेना के एक पूर्व अफसर। ब्रिगेडियर नसीर के चेहरे के भाव लगातार बदलते लग रहे थे। वह जैसे कुछ कहना चाहते थे, लेकिन हिचक रहे थे। अचानक नसीर बोले, 'मौसम अच्छा है ब्रिगेडियर साहब, इंशा अल्लाह, कुछ देर के लिए बाहर बगीचे में चलकर बैठें?'

दोनों बगीचें में पहुंचे। वहां पाकिस्तानी अफसर ने धीमे स्वर में कहा, 'मैं कुछ कबूल करना चाहता हूं, ब्रिगेडियर साहब।' ब्रिगेडियर खेत्रपाल प्यार से अपने मेजबान की आंखों में देखते हुए बोले, 'कहिए बेटा, मैं सुन रहा हूं।' दरअसल, ब्रिगेडियर नसीर उम्र में उनसे कोई 30 साल छोटे होंगे। नसीर ने अपना गला साफ करते हुए कहा, 'सर, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं...मैंने भी 1971 की जंग में हिस्सा लिया था। तब मैं एक युवा मेजर था, पाकिस्तानी सेना की 13वीं लांसर्स (सेना की एक रेजिमेंट) का स्क्वॉड्रन कमांडर।' ब्रिगेडियर खेत्रपाल चौंक गए। 13वीं लांसर्स तो वही रेजिमेंट थी, भारत-पाकिस्तान के अदला-बदली वाली। 1947 में बंटवारे के वक्त पाकिस्तान ने पूना हॉर्स (ब्रिगेडियर खेत्रपाल के बेटे की रेजिमेंट) के एक मुस्लिम स्क्वॉड्रन के साथ अपने सिख स्क्वॉड्रन की अदला-बदली की थी।

इस लिहाज से 16 दिसंबर 1971 को भारत और पाकिस्तान के सैनिकों ने अपनी ही पुरानी रेजिमेंटों के खिलाफ जंग लड़ी थी। नसीर ने कहा, 'हमने ही पूना हॉर्स के खिलाफ बासंतार की लड़ाई लड़ी थी। सर, मैं ही वो शख्स हूं जिसने आपके बेटे की जान ली थी।' ब्रिगेडियर खेत्रपाल निःशब्द रह गए। चुपचाप सुनते रहे।

ब्रिगेडियर नसीर ने याद किया, '16 दिसंबर की सुबह मैं बासंतार में भारतीय रेजिमेंट के खिलाफ काउंटर-अटैक का नेतृत्व कर रहा था। दूसरी तरफ आपके बेटे थे, एकदम चट्टान की तरह। वह और उनके साथियों ने हमारे कई टैंकों को नेस्तनाबूद कर दिया था। अंत में सिर्फ हम दो ही बचे। हम दोनों आमने-सामने थे, हमारे टैंकों के बीच महज 200 मीटर का फासला था। हम दोनों ने एक साथ फायरिंग की और एक दूसरे के टैंक को निशाना बनाया। हालांकि, मैं खुशकिस्मत रहा कि मैं बच गया लेकिन अरुण को सर्वोच्च बलिदान देना पड़ा।' नसीर आगे बोले- आपका बेटा बहुत बहादुर था सर। उसने अकेले ही हमें हरा दिया। हमारी हार के लिए वही जिम्मेदार था।

ब्रिगेडियर खेत्रपाल एक तरह से सुन्न हो चुके थे। उन्होंने पूछा, 'तुम्हें कैसे पता चला कि वह टैंक अरुण का था?'

नसीर ने बताया कि अगली सुबह (17 दिसंबर) को जब संघर्षविराम का ऐलान हुआ तो वह अपने एक साथी का शव लेने भारतीय कैंप के लिए निकले। लेकिन उनमें एक बात के लिए उत्सुकता भी जग चुकी थी। वह जानना चाहते थे कि आखिर वह अप्रतिम योद्धा कौन था जिसने अकेले ही उनके टैंकों को तहस-नहस कर दिया था। नसीर भारतीय सैनिकों के पास पहुंचे और उनसे पूछा कि उस टैंक (हाथ से इशारा करते हुए) पर कौन था? उन्हें बताया गया कि वह पूना हॉर्स के सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण खेत्रपाल थे। नसीर भारतीय सैनिकों से बोले, 'बहुत बहादुरी से लड़े आपके साहब। चोट तो नहीं आई उन्हें?' जवाब मिला, 'साहब शहीद हो गए।'

ब्रिगेडियर नसीर ने ब्रिगेडियर खेत्रपाल को बताया कि उन्हें तो बहुत बाद में अरुण की उम्र के बारे में पता चला। जब उन्हें मरणोपरांत परम वीर चक्र मिला और वह हिंदुस्तान में नेशनल हीरो बन गए तब पता चला कि वह कितनी कम उम्र के थे। नसीर ने आगे कहा, 'मुझे नहीं पता था सर कि वह सिर्फ 21 साल का था। हम दोनों ही सैनिक थे और दोनों ही अपने-अपने मुल्क के लिए अपना फर्ज निभा रहे थे।'

चांदनी रात में दोनों अधिकारी बहुत देर तक खामोश बैठे रहे। फिर ब्रिगेडियर खेत्रपाल अपनी कुर्सी से उठे। नसीर तुरंत उनका पैर पकड़ लिए। ब्रिगेडियर खेत्रपाल ने उनकी नम आंखों में देखा और उस शख्स को बांहों में भर लिया, जिसने उनके बेटे की जान ली थी। उसके बाद वह अपने बेडरूम में चले गए।

पाकिस्तान के गुलाब देवी अस्पताल और लाला लाजपत राय का क्या नाता है

दो दिन पहले पाकिस्तान में लाहौर के मुख्य राजमार्ग फि रोजपुर रोड पर एक अंडरपास का उद्घाटन हुआ तो सोशल नेटवर्किंग साइटों पर इसके पास स्थित गुलाब देवी अस्पताल और इसे बनाने वाले लाला लाजपत राय के बारे में खूब चर्चा हुई.

लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी, 1865 को ब्रिटिश पंजाब के लुधियाना के धोदीके गाँव में हुआ था. उनके पिता मुंशी राधा कृष्ण अग्रवाल एक सरकारी स्कूल में उर्दू और फारसी के शिक्षक थे. वो सर सैयद अहमद खान के बहुत बड़े प्रशंसक थे. लाला लाजपत राय की माँ गुलाब देवी अपनी समाज सेवा के लिए जानी जाती थीं.

लाला लाजपत राय गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वकील बन गए. उन्होंने अपने पिता लाला राधा कृष्ण की राजनीतिक गतिविधियों से प्रेरित होकर अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की.

साल 1892 में लाला लाजपत राय लाहौर चले गए. वहाँ उन्होंने राष्ट्रवादी दयानंद एंग्लो-वैदिक स्कूल (डीएवी स्कूल) की स्थापना में मदद की. वे आधुनिक हिंदू धर्म के सुधारवादी संप्रदाय 'आर्य समाज' के संस्थापक रहे दयानंद सरस्वती के अनुयायी बन गए.

उस समय आर्य समाज दो गुटों में बँट चुका था. एक गुट वो था जो अंग्रेजी को स्कूली पाठ्यक्रम से बाहर करना चाहता था और दूसरा गुट अंग्रेजी पढ़ाने के पक्ष में था. लालाजी ने दूसरे गुट का समर्थन किया और इस बारे में पार्टी के भीतर पनपे मतभेदों को दूर करने में अहम भूमिका निभाई.

उर्दू की अपनी पुस्तिका 'गुलामी की अलामतें और गुलामी के नताइज' (गुलामी के लक्षण और गुलामी के परिणाम) में वो लिखते हैं, ''मेरी राय में प्रत्येक शिक्षित भारतीय को कोशिश करनी चाहिए कि जितना संभव हो सके वो अंग्रेजी के उपयोग को कम करता जाए. उर्दू-हिंदी की पत्रिकाओं को मंगवाए और कुछ समय उर्दू-हिंदी साहित्य पढ़ने में बिताए.''

''केवल उन लड़कों और लड़कियों को अंग्रेजी पढ़ाई जानी चाहिए जो पहले अपनी भाषा में अच्छी महारत और कौशल पैदा कर लें. ये प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि राष्ट्रभाषा को विकसित करे और गुलामी के इस प्रतीक को कम से कम, इतना कम कर दे जितना कि हालात इसे कम करने की इजाजत दे.''

साल 1905 में लाला लाजपत राय इंग्लैंड गए. पंजाब में राजनीतिक विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने के बाद उन्हें बिना मुकदमे के मई 1907 में ज़िला बदर करके बर्मा (अब म्यांमार) के माँडले जेल भेज दिया गया.

नवंबर में उन्हें वापस आने की अनुमति दी गई जब वायसराय लॉर्ड मिंटो ने फैसला किया कि राजद्रोह के आरोप में उन्हें गिरफ़्तार करने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं.

जेल से छूटने के बाद लाला लाजपत राय स्वराज पार्टी में शामिल हो गए. लाला लाजपत राय जात-पात, दहेज, छुआछूत और दूसरी अमानवीय प्रथाओं के खिलाफ थे.

प्रथम विश्व युद्ध के समय वे अमेरिका चले गए. न्यूयॉर्क शहर में इंडियन होम रूल लीग ऑफ अमेरिका (1917) की स्थापना की. साल 1920 के दशक की शुरूआत में वे भारत लौट आए.

उसी साल, उन्होंने कांग्रेस के एक विशेष सत्र की अध्यक्षता की जिसमें महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन की शुरूआत हुई. साल 1921 से 1923 तक वो जेल में कैद रहे और रिहाई के बाद संविधान सभा के सदस्य चुने गए.

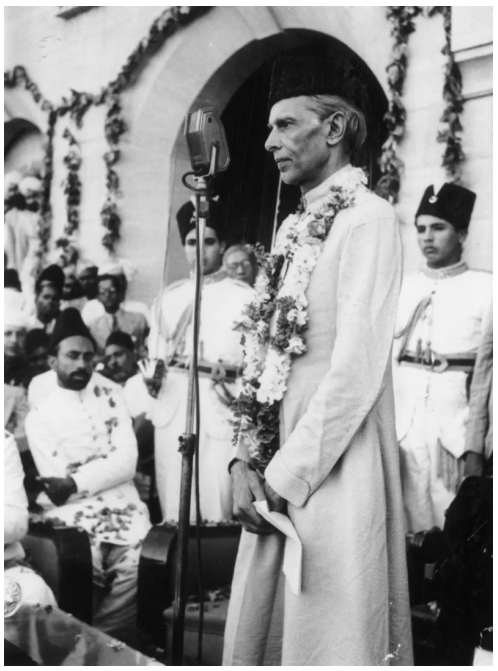

भारत जाहिद चौधरी ने अपनी किताब 'पाकिस्तान की सियासी तारीख' में लिखा है कि लाला लाजपत राय ने साल 1924 में लाहौर के एक अखबार 'ट्रिब्यून' में एक लेख लिखा था. इस लेख में पहली बार उपमहाद्वीप को धार्मिक आधार पर विभाजित करने की योजना प्रस्तुत की गई थी.

इस योजना के अनुसार, ''मुसलमानों के चार राज्य होंगे- सीमांत राज्य, पश्चिमी पंजाब, सिंध और पूर्वी बंगाल. अगर भारत के किसी और इलाके में मुसलमानों की इतनी बड़ी संख्या हो कि उनका राज्य बनाया जा सके तो उनका भी इसी तरह परिसीमन किया जाना चाहिए, लेकिन यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि यह अखंड भारत नहीं होगा. इसका मतलब ये है कि भारत स्पष्ट रूप से मुस्लिम भारत और गैर-मुस्लिम भारत में विभाजित हो जाएगा.''

इतिहासकार हसन जाफर जैदी लिखते हैं कि पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने मार्च 1940 में एक सम्मलेन को संबोधित करते हुए उन दिनों छपी इंद्र प्रकाश की किताब निकाली, जिसमें लाला लाजपत राय का एक पत्र शामिल था, जो उन्होंने 16 जून, 1925 को कांग्रेस के अध्यक्ष चित्तरंजन दास को लिखा था.

पाकिस्तान के संस्थापक ने ये पूरा पत्र पढ़ा. इसमें लाला लाजपत राय ने जो कुछ लिखा था, उसका निचोड़ ये है कि ''मैं मुसलमानों का इतिहास और न्यायशास्त्र पढ़कर इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि हिंदू और मुसलमान एक साथ नहीं रह सकते. आपको हमारे लिए बचाव का कोई रास्ता निकालना चाहिए.''

साल 1928 में उन्होंने संवैधानिक सुधार पर ब्रिटिश साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के लिए संविधान सभा में एक प्रस्ताव पेश किया. पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने भी आयोग का बहिष्कार किया था. 30 अक्टूबर को कांग्रेस नेता लाला लाजपत राय के नेतृत्व में साइमन कमीशन के विरोध में हजारों लोग लाहौर रेलवे स्टेशन पर एकत्र हुए.

भगत सिंह ने लाला लाजपत राय की मौत के लिए पुलिस प्रमुख को दोषी ठहराया. हालांकि गलत पहचान के चलते उनके बजाय एक जूनियर अधिकारी जेपी सॉन्डर्स की हत्या कर दी. उसके बाद मौत की सजा से बचने के लिए भगत सिंह को लाहौर से भागना पड़ा.

मृत्यु के बाद, लाहौर में लाला लाजपत राय की प्रतिमा स्थापित की गई. यह प्रतिमा गोल बाग के बाद कुछ समय मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स की पार्किंग में रही. स्वतंत्रता के बाद 15 अगस्त, 1948 को इस प्रतिमा को शिमला में मॉल रोड पर लगा दिया गया.

शेर-ए-पंजाब और पंजाब-केसरी के नाम से मशहूर लाला लाजपत राय ने उर्दू और अंग्रेजी में बहुत से लेख और किताबें लिखीं. अपनी राजनीतिक गतिविधियों के अलावा, लाला जी को लक्ष्मी इंश्योरेंस कंपनी के संस्थापकों में से एक और पंजाब नेशनल बैंक के संस्थापक के तौर पर भी याद किया जाता है.

लाला लाजपत राय की माँ गुलाब देवी की मृत्यु साल 1927 में टीबी की वजह से हुई. उसी साल जिस जगह पर उनकी माँ की मृत्यु हुई, वहां उन्होंने 2 लाख रुपये की लागत से महिलाओं के लिए एक गुलाब देवी ट्रस्ट अस्पताल की स्थापना की.

उसके बाद ट्रस्ट ने अप्रैल 1930 में तत्कालीन सरकार से 16 हजार रुपये में 40 एकड़ जमीन खरीदी. सरकार ने 10 एकड़ जमीन अलग से दान में दी.

इसके निर्माण का कार्य साल 1931 में शुरू हुआ और ये बिल्डिंग लाला लाजपत राय की मृत्यु के छह साल बाद 1934 में पूरी हुई. साल 1934 में टीबी रोगियों के लिए अस्पताल के दरवाजे खोल दिए गए.

यहां लगे संगमरमर के शिलालेख पर अंग्रेजी और हिंदी में लिखा है: 'श्रीमती गुलाब देवी ट्यूबरक्यूलोसिस हस्पताल स्त्रियों के वास्ते महात्मा गांधी जी ने 17 जुलाई, 1934 को अपने कर कमलों से खोला.'

इस अस्पताल ने 1947 में भारत से आए शरणार्थियों को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधाएं प्रदान कीं.

नवंबर 1947 में, पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने अपनी बहन फातिमा जिन्ना के साथ इस अस्पताल का दौरा किया और लिखा, ''मैंने 6 नवंबर, 1947 को गुलाब देवी अस्पताल का दौरा किया, जो अब शरणार्थियों की देख-भाल कर रहा है. इसके प्रभारी, डॉक्टर, नर्स और अन्य लोग बहुत अच्छा काम कर रहे हैं और हम इस मानवीय सेवा और निःस्वार्थ समर्पण को स्वीकार करते हुए इनका धन्यवाद करते हैं.''

साल 1947 में ट्रस्टियों के भारत चले जाने पर सरकार ने जुलाई 1948 में बेगम राइना लियाकत अली खान, सैयद मरातब अली, प्रोफेसर डॉक्टर अमीरुद्दीन और कुछ अन्य उल्लेखनीय और परोपकारी लोगों को अस्पताल के कार्यवाहक ट्रस्टी बनने के लिए आमंत्रित किया. बेगम राइना को गुलाब देवी चेस्ट अस्पताल की प्रबंधन समिति का प्रमुख बनाया गया.

पाकिस्तान की स्थापना के समय अस्पताल में 50 बिस्तर थे. वर्तमान में यह अस्पताल दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा चेस्ट हॉस्पिटल बन गया है जिसमें 1,500 बिस्तरों के साथ सभी प्रकार के हृदय और फेफड़ों की बीमारियों, विशेष रूप से टीबी के रोगियों के स्वास्थ्य की देखभाल की जाती है.

लाहौर में लाला लाजपत राय के नाम पर धर्मपुरा में एक सड़क भी है, लेकिन उनके मानवीय सरोकार का सबसे बड़ा स्मारक गुलाब देवी अस्पताल ही है.

26/11 मुंबई हमले के 13 साल बीतने के बाद भी नहीं जागी पाकिस्तान की आत्मा, न्याय दिलाने में नहीं दिखाई ईमानदारी

मुंबई में हुए भयानक हमले को 26 नवंबर, 2021 यानी आज पूरे 13 साल हो गए. आज ही का दिन था। जब पाकिस्तान में मौजूद जिहादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के 10 लोगों ने मुंबई के ताज होटल पर हमला कर दिया था और 4 दिनों में 12 हमलों को अंजाम दिया था। ताजमहल पैलेस होटल, नरीमन हाउस, मेट्रो सिनेमा और छत्रपति शिवाजी टर्मिनस सहित अन्य स्थानों पर हुए हमलों में 15 देशों के 166 लोग मारे गए थे।

साल 2008 के नवंबर में हुए मुंबई हमले को 26/11 के नाम से भी याद किया जाता है। इस हमले के बाद ऐसा पहली बार हुआ था जब वैश्विक स्तर पर इतने बड़े पैमाने पर निंदा की गई थी और इस हमले ने ही केंद्र सरकार को अपने आतंकवाद विरोधी अभियानों को गंभीर रूप से बढ़ाने और पाकिस्तान के साथ पहले से ही तनावपूर्ण संबंधों के कई पहलुओं की फिर से जांच करने के लिए प्रेरित किया।

सुरक्षा बलों ने अजमल कसाब नाम के एक एकमात्र हमलावर को पकड़ा था जिसने बाद में पुष्टि की कि इस हमले की योजना की पूरी प्लानिंग लश्कर और पाकिस्तान में मौजूद दूसरे आतंकी संगठनों ने की थी। देश की खुफियां एंजेसियों ने कसाब के जरिए पता किया कि सभी हमलावर पाकिस्तान से आए

थे और उन्हें कंट्रोल करने वाले लोग भी वहीं से काम कर रहे थे।

हमले के दस साल बाद, पाकिस्तान के पूर्व प्रधान मंत्री नवाज शरीफ ने सनसनीखेज खुलासे की एक सीरीज में यह भी संकेत दिया कि इस्लामाबाद ने 2008 के मुंबई हमलों में एक भूमिका निभाई थी। वर्तमान सबूत बताते हैं कि 26/11 के हमलों में पाकिस्तान के आतंकवादियों का हाथ था जिन्हें पाक पालता-पोसता है। तीन पुरुष आतंकवादियों - अजमल कसाब, डेविड हेडली और जबीउद्दीन अंसारी के पूछताछ के दौरान यह साबित हुआ।

अपनी सार्वजनिक स्वीकृति के बाद भारत के सभी सबूत साझा करने के बाद भी पाकिस्तान ने 26/11 के हमलों की 13वीं बरसी पर भी पीड़ितों के परिवारों को न्याय दिलाने में अभी तक ईमानदारी नहीं दिखाई है। 7 नवंबर को, एक पाकिस्तानी अदालत ने छह आतंकवादियों को मुक्त कर दिया इनमें वे आतंकी भी शामिल थे। जिन्होंने भयानक हमलों को अंजाम दिया था।

लश्कर-ए-तैयबा कमांडर और 2008 के मुंबई हमलों के सरगना जकी-उर-रहमान लखवी भी देश के पंजाब प्रांत के आतंकवाद-रोधी विभाग (सीटीडी) द्वारा आतंकवाद के वित्तपोषण के आरोप में गिरफ्तार होने के बाद से 2015 से जमानत पर था। पाकिस्तान में आतंकवादी संगठन भी जांच से बचने और दावों का मुकाबला करने के लिए अपना नाम बदलते रहते हैं, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र आतंकवाद विरोधी संगठन ने अपनी निगरानी बढ़ा दी है।

मुंबई मनपा गट के नेता विनोद मिश्रा के कर कमलों द्वारा मेट्रो दिनांक कैलेंडर का विमोचन

मुंबई , नए वर्ष के शुभ अवसर में मेट्रो दिनांक समाचार पत्र का 15 वां वार्षिक कैलेंडर का विमोचन मलाड पूर्व के भाजपा मनपा गट के कार्यालय मुंबई संपन्न हुआ. इस शुभ अवसर पर मनपा गट के नेता नगरसेवक श्री विनोद मिश्रा के कर कमलों द्वारा कैलेंडर का विमोचन और प्रधान संपादक दीनानाथ तिवारी का जन्मदिन विनोद मिश्रा के साथ केक काटकर मनाया गया. इस शुभ अवसर पर मेट्रो दिनांक समाचार पत्र के मुद्रक प्रकाशक श्रीमती मंजू तिवारी वरिष्ठ पत्रकार शिव शंकर तिवारी, ओपी तिवारी, संतोष तिवारी, अरुण गुप्ता, रोहित जयसवाल, नवीन पांडे, प्रवीण राजगुरु, राजेश पाल, पूजा पांडे, सुरेश वाकडे, निलेश पांडे, के अलावा भारी संख्या में भाजपा पदाधिकारी भारती भिंडे, शैलेंद्र दुबे, दरोगा तिवारी, केशव भाई व मेट्रो दिनांक समाचार पत्र के शुभचिंतक पाठक लोग उपस्थित थे.

पति के साथ प्रकाश पर्व मनाने लाहौर गई महिला, पाकिस्तानी शख्स से कर लिया निकाह

पति के साथ श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश पर्व मनाने लाहौर गई एक महिला ने मुल्तान निवासी पाकिस्तानी शख्स से लाहौर में ही निकाह रचा लिया. महिला पश्चिम

बंगाल की राजधानी कोलकाता की रहने वाली है.

श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश पर्व मनाने के लिए 17 नवंबर को पाकिस्तान गए श्रद्धालुओं के जत्थे में शामिल भारतीय मूल की एक मूक-बधिर महिला ने लाहौर में निकाह रचा लिया. लाहौर की एक मस्जिद में उसने मुस्लिम रीति-रिवाज के अनुसार निकाह किया.

परमजीत ने वहां इस्लाम कबूल किया. हालांकि, अभी परमजीत कौर भारत से दिल्ली का वीजा लगवाकर पाकिस्तान गई हैं तो वहां की पुलिस ने वहां रहने की इजाजत नहीं दी है.

जानकारी के अनुसार, भारत से दिल्ली का वीजा लगवाकर पाकिस्तान गई 40 साल की परमजीत कौर पिछले दो सालों से पाकिस्तानी शख्स से इंटरनेट मीडिया के जरिए जुड़ी थी. परमजीत कौर कोलकाता में रह रही थी.

यह कोई पहला केस नहीं है, जब श्रद्धालुओं के जत्थे में शामिल महिलाओं ने पाकस्तिानी शख्स से शादी की हो. इससे पहले भारतीय पंजाब के बलाचौर शहर की रहने वाली किरण बाला ने जत्थे में जाकर पाकिस्तान में एक मुस्लिम युवक के साथ निकाह कया था.

यह समाचार पत्र मासिक महाराष्ट्र क्राईम्स मालिक,मुद्रक प्रकाशक सिराज चौधरी द्वारा राजीव प्रिंटर्स,४९६,पंचशील नगर-१, नागसेन बुद्ध मंदिर रोड नं-३, तिलक नगर, चेम्बुर,मुंबई-४०००८९ से मुद्रित करवा कर ८/ऐ/१६९/२७०२/टागोर नगर, विक्रोली (पू),मुंबई-४०००८३ से प्रकाशित किया ।

संपादक- सिराज चौधरी मो. ९७७३६२२९६७